लेप्टोस्पायरोसिस - मॉनसून में होने वाला एक खतरनाक संक्रमण

नई दिल्ली। तिलतिलाती धूप से राहत के साथ सुहावना मॉनसून दस्तक दे चुका है! लेकिन मॉनसून खुशियों के साथ संक्रमणों की बाढ़ भी लेकर आता है, जो आपके प्रतिरक्षा तंत्र को कमजोर कर सकते हैं। इस मौसम में वातावरण में अधिक नमी होने के कारण अनेक प्रकार के संक्रमण पैदा हो जाते हैं। बच्चों और वयस्कों को इन महीनों में स्वास्थ्य को कुप्रभावित करने वाले विविध संक्रमणों से बचने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए।

बरसात के मौसम में अनेकानेक संक्रमणों में सबसे अधिक फैलने वाला संक्रमण लेप्टोस्पायरोसिस है।

लेप्टोस्पायरोसिस क्या होता है?

लेप्टोस्पायरोसिस एक तरह का जीवाणुजनित संक्रमण है जो लेप्टोस्पायरा बैक्टिरीआ के कारण होता है। यह संक्रमण बरसात में जमा होने वाले गंदे पानी और पशुओं के मल-मूत्र में पैदा होता है। यह रोग अक्सर संक्रमित पशुओं के मूत्र द्वारा संचारित होता है। इन पशुओं में कुत्ते और घोड़े जैसे पालतू पशुओं से लेकर चूहे, गिलहरी या जंगली सूअर दोनों की अनेक प्रजातियाँ सम्मिलित हैं। यह बैक्टिरीआ पानी और मिट्टी में महीनों तक जीवित रहता है। इस रोग में संदूषित खाद्य पदार्थों एवं पानी के सहारे बैक्टिरीआ शरीर में प्रवेश करता है, अंतड़ियों में पहुँचता है और रक्त में फैल कर संक्रमण पैदा करता है। इस रोग के अनेक लक्षण होते हैं। कुछ मरीजों को त्वचा में संक्रमण, बुखार, किडनी या लिवर की निष्क्रियता, श्वसन तंत्र की निष्क्रियता, मस्तिष्क ज्वर या गंभीर मामलों में मृत्यु तक हो सकती है।

लेप्टोस्पायरोसिस के लक्षण और चिन्ह क्या-क्या हैं?

इसके लक्षण बैक्टिरीआ के संपर्क में आने के बाद दो दिनों से लेकर चार सप्ताहों के बीच उत्पन्न होते हैं और ये चरणबद्ध रूप से प्रगट हो सकते हैं।

संक्रमण का प्रथम चरण: तेज बुखार, ठंड लगना, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, थकान, गले में जलन, पेट में दर्द, उल्टी, जोड़ों में दर्द, चकत्ते और आँखों में लाली।

संक्रमण का द्वितीय चरण: दस्त, जॉन्डिस, किडनी की निष्क्रियता, फेफड़ों में रक्तस्राव, हृदय की धड़कन का क्रमभंग, फेफड़ों में सूजन और मवाद भरे घाव।